भारत का प्रधान निर्यात क्षेत्र

प्रलिम्सि के लिये:

वैश्वीकरण, विस्कोस स्टेपल फाइबर, गुणवत्ता नियंत्रण आदेश, उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना, चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI), राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन

मेन्स के लिये:

भारत का वस्त्र उद्योग, संभावनाएँ और चुनौतियाँ, संबंधित सरकारी नीतियाँ और पहल

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

भारत का प्रधान निर्यात उद्योग, जो रोज़गार में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है, लगातार गिरावट का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, प्रौद्योगिकी और व्यापार पर केंद्रित शोध समूह **ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (GTRI)** की एक हालिया रिपोर्ट ने इस मंदी के पीछे के कारणों को उजागर किया है, जो बाह्य प्रतिस्पर्द्धा के बजाय स्वयं द्वारा लगाए गए अवरोधों का संकेत देती है।

GTRI रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- **निर्यात मूल्य में गिरावट: सत्र 2023-24 में भारत का प्रधान निर्यात 14.5 बिलियन अमेरीकी डॉलर था, जबकि सत्र 2013-14 में यह 15 बिलियन अमेरीकी डॉलर था।**
  - इसी अवधि के दौरान वियतनाम और बांग्लादेश के प्रधान निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो क्रमशः 33.4 बिलियन अमेरीकी डॉलर एवं 43.8 बिलियन अमेरीकी डॉलर तक पहुँच गया।
  - गिरावट के बावजूद, चीन ने अभी भी लगभग 114 बिलियन अमेरीकी डॉलर के प्रधान निर्यात किये।
  - वैश्वीकरण ने प्रतिस्पर्द्धा बढ़ा दी है और उत्पादन को कम लागत वाले श्रम वाले देशों में स्थानांतरित कर दिया है, जिससे भारत की बाज़ार हिस्सेदारी प्रभावित हुई है।

//

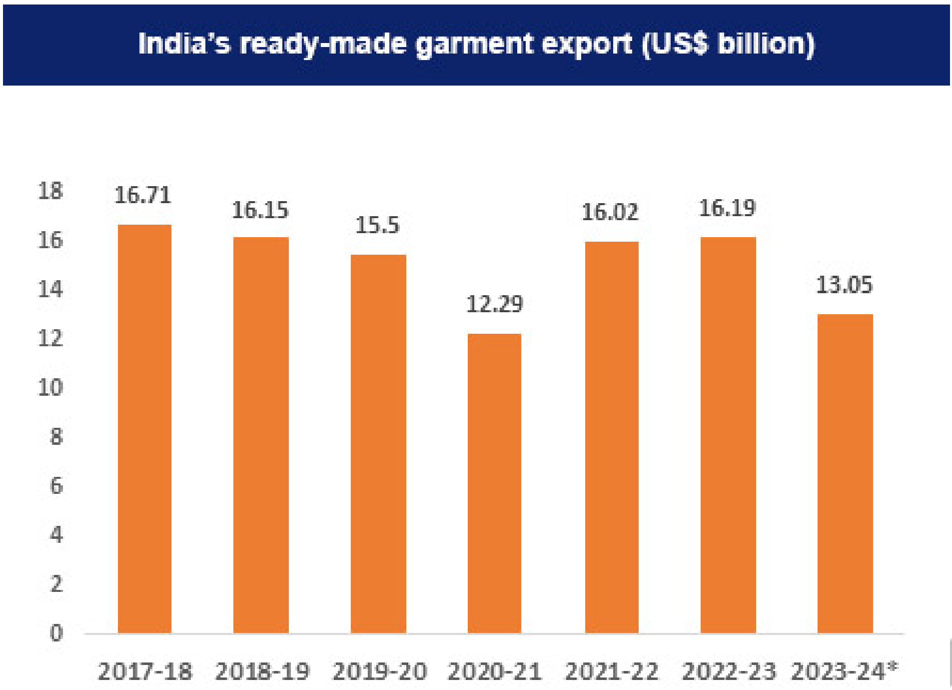

Source: Textile Export Promotion Council, Apparel Export Promotion Council
Note: *Until February 2024

- **व्यापार बाधाएँ:** इस क्षेत्र को आवश्यक कच्चे माल के आयात पर भारी शुल्क का सामना करना पड़ता है, जिससे उत्पादन अधिक महँगा हो जाता है।
    - पुराने रीति-रिवाज़ और व्यापार प्रक्रियाएँ चुनौतियों को बढ़ाती हैं, समय एवं संसाधनों की खपत करती हैं जिनका बेहतर उपयोग किया जा सकता है।
    - **पॉलिएस्टर स्टेपल फाइबर** और **विस्कोस स्टेपल फाइबर** जैसे **कच्चे माल के लिये स्थानीय आपूर्तिकर्त्ताओं का प्रभुत्व** निर्यातकों को अधिक महँगे स्वदेशी विकल्पों पर निर्भर रहने के लिये मजबूर करता है।
    - वस्त्र के आयात के लिये हाल ही में **गुणवत्ता नियंत्रण आदेश** (**QCO**) ने आयात प्रक्रिया को जटिल बना दिया है, जिससे निर्यातकों की लागत बढ़ गई है।
        - निर्यातकों को म**हंगी घरेलू आपूर्ति** का उपयोग करने के लिये मजबूर होना पड़ता है, जिससे भारतीय परिधान वैश्विक स्तर पर कम प्रतिस्पर्द्धी बन जाते हैं। निर्यातकों को प्रत्येक आयातित घटक का सावधानीपूर्वक हिसाब रखना चाहिये जिससे जटिलता और लागत बढ़ सके।
- **उत्पादन आधारित (PLI) योजना: वर्ष 2021 में प्रारंभ की गई** उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना **ने पर्याप्त निवेश आकर्षित नहीं किया है जिसे प्रभावी होने के लिये इसमें और अधिक संशोधनों की आवश्यकता है।**
- **बढ़ते आयात:** भारत का परिधान और वस्त्र आयात वर्ष 2023 में लगभग 9.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, इस बात की चिंता है कि अगर निर्यात चुनौतियों का समाधान नहीं हुआ तो यह बढ़ सकता है।
- **वैश्विक बाज़ारों में सिंथेटिक वस्त्र:** विकसित देश मिश्रित सिंथेटिक्स से बने कपड़ों को पसंद करते हैं, जबकि भारतीय निर्यात का केवल 40% से भी कम सिंथेटिक वस्त्र हैं।
    - सिंथेटिक्स में विविधता लाने से भारतीय निर्माता साल भर काम कर सकते हैं, जिससे शरद ऋतु और सर्दियों के दौरान भी मांग पूरी हो सकती है।
    - भारतीय निर्यातकों को **फास्ट फैशन इंडस्ट्री (FFI)** की तेज़ गतिवाली मांगों को पूरा करने की ज़रूरत है, जिसमें वॉलमार्ट, ज़ारा, H&M, गैप और अमेज़ॅन जैसे प्रमुख ऑनलाइन खुदरा विक्रेता शामिल हैं।
- **क्षेत्र में सुधार के लिये सिफारिशें:** सीमा शुल्क और व्यापार प्रक्रियाओं को सरल बनाने से निर्यातकों पर समय एवं लागत का बोझ कम हो सकता है।
    - आवश्यक कच्चे माल पर शुल्क कम करने से उत्पादन लागत कम करने में मदद मिल सकती है।
    - कच्चे माल के लिये घरेलू बाज़ार में उचित प्रतिस्पर्द्धा सुनिश्चित करने से निर्यातकों के लिये लागत कम हो सकती है।

भारत के परिधान उद्योग के संदर्भ में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- भारत में वस्त्र एवं परिधान उद्योग **अत्यधिक विखंडित** है, जिसमें बड़ी संख्या में छोटे पैमाने के निर्माता और फैब्रिकेटर हावी हैं। लगभग 27,000 घरेलू निर्माता, 48,000 फैब्रिकेटर और 100 निर्माता-निर्यातक हैं। अधिकांश फर्म या तो स्वामित्व वाली हैं या साझेदारी वाली हैं।
    - उद्योग को **कुशल श्रमिकों के एक बड़े समूह** और विभिन्न क्षेत्रों में लगातार विकास से लाभ होता है, जो इसे भारत में एक प्रमुख संभावित क्षेत्र बनाता है।
    - भारत में कपड़ा और परिधान उद्योग कृषि के बाद देश में **दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है, जो 4.5 करोड़ लोगों को** प्रत्यक्ष रोज़गार तथा

संबद्ध उद्योगों में **10 करोड़ लोगों को** रोज़गार प्रदान करता है।

- **प्रमुख उत्पादक और उत्पाद**: भारत दुनिया में कपास और जूट के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। भारत दुनिया में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक भी है और विश्व का 95% हाथ से बुना कपड़ा भारत से निर्यात होता है।
  - तमिलनाडु एक प्रमुख सूती कपड़ा केंद्र है, जो देश के सूती धागे और कपड़ों के निर्यात में 25% से अधिक का योगदान देता है।
- **बाज़ार वृद्धि:** वित्त वर्ष 2026 तक कुल कपड़ा निर्यात 65 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है और वर्ष 2019-20 से 10% **चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR)** से बढ़कर वर्ष 2025-26 तक 190 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है।
- **निर्यात रुझान**: भारत एक बड़ा विनिर्माण आधार के साथ कपड़ा और परिधान का एक महत्त्वपूर्ण निर्यातक है।**वर्ष 2022-23 में, कपड़ा और परिधान निर्यात** भारत के कुल निर्यात का **8.0%** था, जबकि वैश्विक व्यापार में इसकी हिस्सेदारी 5% थी।
  - सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक निर्यात में कपड़ा उत्पादन में 250 बिलियन अमेरिकी डॉलर हासिल करना है। भारत के कपड़ा और परिधान उत्पाद, जिनमें हथकरघा और हस्तशिल्प शामिल हैं, विश्व भर के 100 से अधिक देशों में निर्यात किये जाते हैं, जिनमें **अमेरिका, बांग्लादेश, यूके, यूएई और जर्मनी** जैसे प्रमुख निर्यात गंतव्य शामिल हैं।
    - **अमेरिका सबसे बड़ा आयातक है,** जो भारत के कुल निर्यात का लगभग एक-चौथाई हिस्सा है।
  - भारत ने **मई 2022** में यूएई के साथ एक **मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** पर हस्ताक्षर किये और कपड़ा एवं परिधान निर्यात को बढ़ावा देने हेतु यूरोपीय संघ, ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा, इज़रायल व अन्य देशों/क्षेत्रों के साथ FTA पर बातचीत करने की प्रक्रिया में है।
  - इसके अतिरिक्त, भारत की **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)** **नीति एकल-ब्रांड उत्पाद खुदरा व्यापार में 100% FDI और बहु-ब्रांड खुदरा व्यापार में 51% तक FDI** की अनुमति देती है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय खुदरा विक्रेता भारत से स्रोत प्राप्त करने के लिये आकर्षित होते हैं तथा नए निर्यात गंतव्यों से रुचि बढ़ाते हैं।
- **सरकारी पहल:**
  - **केंद्रीय बजट 2024-25:**
    - बजट 2024 में कपड़ा क्षेत्र के लिये बजट आवंटन **974 करोड़ अमेरिकी डॉलर बढ़ाकर 4,417.09 करोड़ अमेरिकी डॉलर** कर दिया गया है।
    - केंद्रीय बजट में निर्यात के लिये परिधान, जूते और अन्य चमड़े के उत्पाद बनाने के लिये गीले सफेद, क्रस्ट तथा तैयार चमड़े पर सीमा शुल्क को 10% से घटाकर 0% करने का प्रस्ताव है।
    - इसके अतिरिक्त, निर्यात के लिये परिधानों के निर्माण में उपयोग हेतु **बत्तख या हंस से प्राप्त वास्तविक डाउन-फिलिंग** सामग्री पर शुल्क को मौजूदा 30% से घटाकर 10% कर दिया जाएगा।
  - **परिधान निर्यात संवर्धन परिषद (AEPC):** वस्त्र मंत्रालय द्वारा प्रायोजित AEPC की स्थापना वर्ष 1978 में की गई थी। यह भारत से रेडीमेड गारमेंट के निर्यात को बढ़ावा देने हेतु एक नोडल एजेंसी है।
    - इस परिषद का प्राथमिक उद्देश्य भारत में सभी प्रकार के रेडीमेड गारमेंट के निर्यात को बढ़ावा देना, आगे बढ़ाना और विकसित करना है।
    - AEPC FTA, **विदेश व्यापार नीति (FTP)** और द्विपक्षीय समझौतों पर अनुसंधान एवं इनपुट प्रदान करके परिधान उद्योग का समर्थन करता है।
  - **संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (ATUFS)**
  - **PM मेगा एकीकृत वस्त्र क्षेत्र और परिधान (PM MITRA) पार्क**
  - परिधान और मेड-अप के निर्यात पर राज्य तथा केंद्रीय करों एवं शुल्कों में छूट (RoSCTL योजना)
  - निर्यातित उत्पादों पर शुल्क और करों की छूट (RoDTEP) योजना
  - राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन (NTTM) समर्थ योजना
  - रेशम समग्र योजना
  - भारत टेक्स 2024

भारत के परिधान उद्योग को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ क्या हैं?

- **वैश्विक बाज़ार की मांग के साथ निर्यात को संरेखित करना:** परिधान उत्पादों और **सस्टेनेबल फैशन** के विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करें जिनकी वैश्विक स्तर पर उच्च मांग है।
  - **बाज़ार-विशिष्ट रणनीतियाँ:**
    - प्रत्येक देश द्वारा आयातित शीर्ष वस्तुओं की पहचान करना, जिसमें भारत का प्रतिशत कम है।
    - अनुपालन मुद्दों को संबोधित करना और प्रतिस्पर्द्धी देशों के साथ लागत तुलना करना। आपूर्ति-मांग के अंतर को कम करने के लिये सूक्ष्म स्तर पर लक्षित हस्तक्षेप लागू करना।
- **ब्रांड निर्माण को बढ़ावा देना:** प्रभावी ब्रांडिंग के माध्यम से भारतीय परिधानों के कथित मूल्य को बढ़ाना।
  - ब्रांड छवि में सुधार और अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुपालन के लिये **ग्लोबल ऑर्गेनिक टेक्सटाइल स्टैंडर्ड (GOTS)** जैसे प्रमाणन प्राप्त करना।
  - **वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा रेखांकित वर्ष 2030 तक 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर** के परिधान निर्यात लक्ष्य को पूरा करने के लिये कम-से-कम 1,200 नई विनिर्माण इकाइयों की आवश्यकता होगी, जबकि अनुमान है कि इसमें केवल 200 इकाइयों की वृद्धि होगी।
    - भारतीय परिधान उत्पादों की उचित ब्रांडिंग से **इकाई मूल्य प्राप्ति (UVR)** में वृद्धि हो सकती है, जिससे निर्यात अधिक प्रतिस्पर्द्धी बन सकता है।
- **क्षमता निर्माण:** कताई क्षमता के अनुरूप इन भागों के विस्तार और आधुनिकीकरण में निवेश करना। प्रमुख घरेलू अभिनेताओं को क्षमता निर्माण में लाभ को पुनः निवेश करने हेतु प्रोत्साहित करना।
  - मूल्य शृंखला को मज़बूत करने और लागत प्रतिस्पर्द्धात्मकता हासिल करने के लिये बुनाई, कपड़ा प्रसंस्करण तथा परिधान निर्माण में निवेश करना।

- **बाज़ारों और उत्पादों में विविधता लाना: अमेरिका, यूरोपीय संघ और ब्रिटेन जैसे पारंपरिक बाज़ारों पर निर्भरता कम करना।** [FTA](#) **के माध्यम से मॉरीशस जैसे नए बाज़ारों की खोज करना।**
  - बढ़ती वैश्विक मांग को पूरा करने के लिये **मानव निर्मित फाइबर (MMF) वस्त्रों** का उत्पादन बढ़ाना।
    - MMF मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं: **सिंथेटिक (कच्चे तेल से बने)** और **सेल्युलोसिक (लकड़ी के गूदे से बने)।** सिंथेटिक स्टेपल फाइबर की मुख्य किस्में पॉलिएस्टर, ऐक्रेलिक और पॉलीप्रोपाइलीन हैं, जबकि सेल्युलोसिक फाइबर में विस्कोस तथा मोडल शामिल हैं।
- **ई-कॉमर्स अवसरों का लाभ उठाना: वैश्विक** [ई-कॉमर्स निर्यात](#) **वर्ष 2030 तक 800 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है।**
  - भारत का लक्ष्य **वर्ष 2030 तक 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का** व्यापारिक निर्यात लक्ष्य हासिल करना है, **जिसमें 200 बिलियन अमेरिकी डॉलर ई-कॉमर्स** से आएंगे। **देश में इंटरनेट की उच्च पहुँच और** [भारतीय प्रवासी समुदायों](#) **की मांग से इस वृद्धि को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।**
  - MSME के लिये ई-कॉमर्स महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रधान निर्यात को काफी हद तक बढ़ा सकता है। इसे प्राप्त करने के लिये, विनियामक अनुपालन को सरल बनाया जाना चाहिये और ई-कॉमर्स शिपमेंट हेतु अलग-अलग सीमा शुल्क कोड बनाए जाने चाहिये।
  - निर्यात विस्तार के लिये ई-कॉमर्स का उपयोग करने हेतु त्वरित, साहसिक और लक्षित दृष्टिकोण अपनाना महत्त्वपूर्ण है।

??????? ?????? ???????:

प्रश्न. भारत के परिधान उद्योग पर वैश्वीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिये। इसने वैश्विक बाज़ार में इस क्षेत्र की प्रतिस्पर्द्धी स्थिति को कैसे प्रभावित किया है?

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

????????????:

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2020)

1. पिछले दशक में भारत-श्रीलंका व्यापार मूल्य में लगातार वृद्धि हुई है।
2. "कपड़ा और कपड़े से निर्मित वस्तुएँ" भारत व बांग्लादेश के बीच व्यापार की एक महत्त्वपूर्ण वस्तु है।
3. नेपाल पिछले पाँच वर्षों में दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश रहा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. भारत में अत्यधिक विकेंद्रीकृत सूती वस्त्र उद्योग के कारकों का विश्लेषण कीजिये। (2013)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-s-garment-export-sector